इंका असंतुष्टों के अधीरज की अंदरूनी कहानी

आलोक मेहता

राजीव गांधी द्वारा संगठन की बागडोर संभालने के बाद कांग्रेस कार्यालय की कायापलट जारी है. राजीव गांधी का 600 वर्गफुट का क्षेत्र 'सुरक्षित क्षेत्र' माना जायेगा

दृश्य–1

नयी दिल्ली के अकबर रोड का बंगला नं. 24 इंदिरा कांग्रेस का कार्यालय. तेजी से प्रवेश करती हुई कार को दो अधेड़ व्यक्ति रोक देते हैं: "कहां जाना है? किससे मिलना है? क्या समय तय है?" कार में बैठे तीन व्यक्ति किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देते. कार पीछे घुमाने को कहते हैं और एक पेड़ के नीचे गाड़ी रोक नीचे उतरकर बातें करने लगते हैं. बादामी रंग का खादी का कोट पहने एक अधेड़ व्यक्ति बोलते हैं: "और जाओ दिल्ली. कौन सुनता है यहां? ये खड़े हैं इंटेलीजेंस के आदमी. इनके इशारों पर पार्टी मजबूत बनायेंगे."

खादी का कुर्ता-पाजामा पहने साथी युवक ने उत्तेजित हो कर कहा, "दादा, कर्नाटक में गुंडूराव ने गुप्तचर विभाग के उप-महानिरीक्षक की सलाह से चुनाव के टिकट बांटे और उसी के बल पर चुनाव लड़ा था—उसका नतीजा देख लेने के बाद भी हमारे नेताओं को अक्ल नहीं आती है."

तीसरे सज्जन ने अधेड़ व्यक्ति के अधिक निकट पहुंच कर फुसफुसाया: "अभी तो 'मेटल डिटेक्टर' लगता है. 'राजकुमार' की सुरक्षा के लिए कोई कसर नहीं रहने वाली है और हम अपने गांव में विरोधियों की लाठी खाते रहें—इसकी चिंता किसी को नहीं."

बातचीत चल रही थी कि मेन गेट पर खड़े व्यक्तियों से एक महिला नेता की झड़प होती दिखायी देती है: "मैं महिला विंग की ज्वाइंट सेक्रेटरी हूं और अब अंदर जाने के लिए मुझसे भी जवाबतलब होगा? आप समझते क्या हैं? मैं इंदिराजी से शिकायत करूंगी. . ."

यह सिलसिला अभी तो शुरू हुआ है, जबकि इंदिरा कांग्रेस में संगठनात्मक कायापलट का दौर प्रारंभ हुआ है. संगठन की तस्वीर सुधारने के लिए 'पुराने-नये चेहरों' को ही नहीं लाया गया है, वरन् अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के 'कैंप आफिस' (अभी बाहर बोर्ड पर नहीं लिखा है) को भी नये सिरे से सजाया-संवारा जा रहा है. एक बड़ा ठेकेदार 'होम ब्यूटीफुल' की एक रंगीन पुस्तिका लिए डिजाइन कार्य की देखरेख कर रहा है. बीच-बीच में पार्टी के नये महासचिव संसदसदस्य राजीव गांधी 'काम की प्रगति' देख जाते हैं और पार्टी कार्यालय के 'आधुनिकीकरण' के लिए निर्देश भी देते रहते हैं. उनकी उपस्थिति मात्र से इस दफ्तर में हलचली सी मच जाती है. विशेष रूप से आगे-पीछे दौड़ते सुरक्षा कर्मचारी आतंक का वातावरण बना देते हैं; दिलचस्प बात तो यह है कि राजीव गांधी की अनुपस्थिति में भी ये सुरक्षा कर्मचारी और गुप्तचर विभाग के अधिकारी सतर्कतापूर्ण चक्कर लगाते रहते हैं.

और यह चक्कर यहीं समाप्त नहीं होता. प्रदेशों में 'नेतृत्व परिवर्तन' की मांग को लेकर जो भी विचार होता है वह गुप्तचर अधिकारियों की सूचना के आधार पर होता है. तभी तो एक प्रदेश के असंतुष्टों का प्रतिनिधिमंडल पार्टी नेता श्रीमती गांधी के पास पहुंचता है, तो वे सवाल करती हैं: "भ्रष्टाचार के आरोपों की बात छोड़ें और जो शिकायत हो वे बतायें. मुझे मालूम है वहां क्या-क्या हो रहा है." पार्टी के विधायकों-संसदसदस्यों का कहना है कि 'पहले भी इंटेलीजेंस की रिपोर्ट पर विशेष ध्यान दिया जाता था, लेकिन पार्टी कार्यकर्ताओं की बात भी सुनी जाती थी और उस पर कार्रवाई होती थी. लेकिन अब तो लगता है कि पार्टी कार्यकर्ताओं की बात की कोई कीमत नहीं.'

म. प्र. में विधानसभा से इस्तीफे की धमकी

दृश्य–2

इन्हीं परिस्थितियों में मध्यप्रदेश, बिहार और राजस्थान के असंतुष्टों का धीरज टूटता दिखाई दे रहा है. 14 फरवरी को भोपाल में इंका विधायक दल के 72 असंतुष्ट सदस्यों की एक बैठक होती है और इसमें मुख्यमंत्री को हटाये जाने की मांग करने वाला एक ज्ञापन तैयार होता है. पक्षपात, भ्रष्टाचार, प्रशासन में ढिलाई, पार्टी कार्य-

कर्तालों की उपेक्षा, और भारतीय जनता पार्टी के बढ़ते प्रभाव पर चिंता व्यक्त की जाती है और यही बातें आपस में लिखी जाती हैं. इसी बातचीत के दौरान एक विधायक उत्तेजित हो कर कहता है—"**इस मुख्यमंत्री के रहते अगले चुनाव में पार्टी तो जीत नहीं पायेगी इसलिए अच्छा यही है कि हम अभी ही विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दें. ऐसा करने पर शायद हाईकमान हमारी बात को समझने के लिए बाध्य हो जायेगी.**" तीन-चार विधायक एक साथ बोलते हैं—"यह विचार भी ठीक है, हम भी इस्तीफा देने को तैयार हैं." बीच में बैठे हुए असंतुष्टों के नेता कहते हैं "इतनी जल्दी धीरज छोड़ने से कैसे काम चलेगा. अभी तो हमें पूरी लड़ाई लड़नी है."

इसी आपात को लेकर विधायकों का एक प्रतिनिधि मंडल 16 फरवरी को प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के पास पहुंचता है. असंतुष्ट समय निर्धारित होने का इंतजार नहीं करना चाहते, इसलिए '**सुबह के दर्शन**' कार्यक्रम में ही लाइन लगा लेते हैं. श्रीमती गांधी चक्कर लगाते हुए उनके पास पहुंचती हैं और परिचय मिलने के बाद अलग हट कर इंतजार करने और बातचीत किये जाने का संकेत देती हैं. और थोड़ी देर बाद सामने वाले कमरे में आ कर उन्हें खुल कर अपनी बात कहने का अवसर देती हैं. विधायक उत्साहित हो कर वे सारी बातें दोहराते हैं जो उनकी बैठक में उभर कर सामने आयी थीं. आपस के संबंध में श्रीमती गांधी सलाह देती हैं 'यह आप फोतेदार को दे दीजियेगा.' एक विधायक अवसर और मूड का फायदा उठा कर कहता है—"उन पर हमें भरोसा नहीं है. इसे आप ही रखिए और जांच करवाइए. नेतृत्व परिवर्तन किये बिना पार्टी की इज्जत नहीं बचायी जा सकेगी." इंदिरा जी कहती हैं—"वे तो केवल पोस्टमैन हैं. आपकी बात मुझ तक पहुंचाते हैं और मेरी बात आप तक. बहरहाल इसे मेरे पास ही छोड़ दीजिए." वह आपात को अपने कागजों में सबसे ऊपर रख देती हैं. . . . .

असंतुष्ट और समर्थक 'संतुष्ट'

दृश्य—3

20 मिनट की इस मुलाकात से असंतुष्ट बेहद प्रसन्न और आशान्वित हैं. लेकिन **दो दिन बाद मुख्यमंत्री श्री अर्जुन सिंह के समर्थक हरिजन आदिवासी विधायकों का प्रतिनिधित्व मंडल श्री राजीव गांधी के पास पहुंचता है और नेतृत्व परिवर्तन** की संभावना पर चिंता व्यक्त करता है, तो श्री राजीव गांधी कहते हैं—"अभी आप लोगों को आने की क्या आवश्यकता थी. जाइए अपने क्षेत्र में और 20 सूत्री कार्यक्रमों के क्रियान्वयन पर निगाह रखिए. अभी तो दूसरे प्रदेशों के संबंध में विचार हो रहा है." वे समर्थक भी संतुष्ट हो कर भोपाल रवाना होते हैं. इस तरह असंतुष्ट भी संतुष्ट हैं और समर्थक भी.

15 फरवरी को ही पटना में मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र अपने मंत्रिमंडल के 11 सदस्यों को हटा देते हैं. पार्टी में चल रहे 'सफाई अभियान' के अंतर्गत यह कदम उठाया गया. इन मंत्रियों में मुख्यमंत्री समर्थक और सर्वाधिक विश्वस्त व्यक्ति भी हैं और उनके विरुद्ध अभियान चलाने वाले नेता भी. प्रतिक्रिया तीखी होती है. अगले दिन दिल्ली में कार्यवाहक अध्यक्ष **पंडित कमलापति त्रिपाठी** पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहते हैं—"बिहार के मुख्यमंत्री ने मंत्रिमंडल में परिवर्तन के लिए हम से सलाह नहीं ली." अटकलें शुरू हो जाती हैं. "यह जगन्नाथ मिश्र का विद्रोह है. उन्होंने मनमाने ढंग से मंत्रियों को हटा दिया." तो श्री मिश्र समर्थक एक पार्टी नेता ने कहा—"जगन्नाथ मिश्र राजनीति के नये खिलाड़ी नहीं हैं. **उन्हें जिनसे पूछना था उनसे पूछ लिया. पंडित जी से हर बात पूछने की आवश्यकता ही क्या है?**"

अटकलों के इसी दौर में असंतुष्ट विधायकों का प्रतिनिधि मंडल दिल्ली पहुंच जाता है और उनके इस रवैये के विरुद्ध आवाज उठाता है. प्रतिनिधि मंडल के नेता श्रीमती गांधी, श्री राजीव गांधी और पंडित कमलापति त्रिपाठी से भेंट करते हैं. लेकिन इसी बीच मुख्यमंत्री समर्थक भी केंद्रीय नेताओं के दरवाजे पर पहुंच जाते हैं. आरोपों और प्रत्यारोपों का यह सिलसिला अंतहीन है. इंदिरा कांग्रेस की बिहार शाखा के सचिव **श्री अर्जुनप्रसाद** गुप्त दावा करते हैं—"कल जो असंतुष्ट भ्रष्टाचार के आरोप में मंत्रियों को हटवाने की मांग कर रहे थे, आज वे ही उन्हें हटाये जाने का विरोध करने के लिए दिल्ली में डेरा डाले हुए हैं. आखिर वे चाहते क्या हैं? मुख्यमंत्री को अपने ढंग से मंत्रिमंडल के पुनर्गठन की छूट तो होनी ही चाहिए. वैसे भी जगन्नाथ मिश्र को हटाने के बाद कोई कमजोर नेता आ गया, तो पार्टी के कुछ महीनों में ही सत्ता से हटने की नौबत आ सकती है."

इसके उत्तर में असंतुष्टों के नेता दावा करते हैं—"विकल्प की कमी नहीं है. पहले वर्तमान मुख्यमंत्री को हटाने का फैसला होना चाहिए. इतनी अधिक बदनामी तो किसी भी प्रदेश के मुख्यमंत्री की नहीं हुई है. क्या केवल न्यायालय से फैसला होने के बाद ही बदनाम मुख्यमंत्री हटाये जाने की परंपरा कायम की जायेगी?"

संवाद : राजस्थान मुख्यमंत्री और विधायकों का

दृश्य—4

15 फरवरी—जयपुर में इंका विधायक दल की बैठक. चार घंटों तक झड़पों और खींचातानी का अभूतपूर्व दृश्य. मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर बैठक की कार्यवाही प्रारंभ करते हैं और हंगामे की हालत में स्वयं ही इसे समाप्त करने की घोषणा करते हैं. मुख्यमंत्री, उनके समर्थकों और विरोध में आवाज उठाने वाले असंतुष्ट विधायकों के बीच हुए संवाद के प्रमुख अंश हूबहू सुनना और पढ़ना बेहद दिलचस्प लगता है. संवाद कुछ इस प्रकार हुआ :

शिवचरण माथुर : प्रधानमंत्री जी के 20 सूत्री कार्यक्रम में राजस्थान ने काफी अच्छी प्रगति की है. इस बारे में केंद्र की उपलब्धियों तथा हमारे राज्य के काम की तुलना की जाये, तो हमारे यहां की उपलब्धियों का प्रतिशत काफी अधिक बैठेगा. आंकड़ों को देखने से पता पड़ जायेगा. .

विधायक : साहब आप आंकड़े क्या देते हैं. आप तो राजनैतिक परफॉर्मेंस बताओ. यह तो पार्टी मीटिंग है साहब. . .

(दूसरा स्वर): एक निवेदन था साहब. इन आंकड़ों की केंद्र स्तर से क्यों तुलना कर रहे हैं. इसका मतलब यह कि आप इंदिरा की उपलब्धियों से राजस्थान की तुलना कर रहे हैं.

शि. माथुर : केंद्र की तुलना में हम क्या कर सकते हैं, यह बता रहा हूं.

आस्था पर भरोसा : देवरहा बाबा से आशीर्वाद लेते जगन्नाथ मिश्र और उनकी पत्नी

बैठ गया हूं, तो हटाना मुश्किल है : शिवचरण माथुर.

विधायक : यह तो बैठ को चैलेंज हुआ. आप बताना चाह रहे हैं कि बैठ ने इतना काम किया और राजस्थान ने इतना ज्यादा किया...

—आप तो मुख्य मुद्दे पर आ जाओ साहब.

शि. माथुर : आप तो जानते हैं कि राज्य में निरंतर सूखे की स्थिति रही है. पिछले वर्ष तो पूरा राजस्थान अकालग्रस्त था. इस वर्ष भी 27 में से 26 जिलों में सूखा है. इससे बजट घाटे की काफी विकट स्थिति हो गयी थी... राहत कार्य बढ़ जाने से बजट घाटे को नियंत्रित करने में बाधा आयी. इसके बाद सरकारी कर्मचारियों के महंगाई भत्ते आदि बढ़ाने पड़े.

विधायक : यह क्यों बढ़ाने पड़े. हमने तो कहा नहीं था.

—आप बाद में बोल लीजिएगा न.

—नहीं जो बात समझ में नहीं आती उसे तो उठाना होगा.

—ये दोनों बातें साथ साथ नहीं हो सकतीं.

शि. माथुर : मीटिंग नहीं चलानी हो तो....

विधायक : नहीं मीटिंग तो आपको चलानी ही है. हमारे को मीटिंग करनी है. इस तरह आपकी हमें माइंड करने की जरूरत नहीं है.

शि. माथुर : शायद तो मैं ही करूंगा क्योंकि मैं ही चला रहा हूं. आपको बोलने का मौका मिलेगा.

विधायक: पर बात तो पूछेंगे साहब!

शि. माथुर : काम करने का यह तरीका नहीं है.

विधायक : आप यों ही बोलते जाओ. इसका तो कोई अंत नहीं (शोर)

शि. माथुर. : मैं बहुत नम्रतापूर्वक कह रहा हूं. यह अपने घर की मीटिंग है. आप रात को 9 बजे तक बैठिए, 10 बजे तक बैठिए.

विधायक : हम तो फुरसत में ही हैं साहब.

—छठे सूत्र में क्या प्रगति है साहब?

शि. माथुर : (प्रश्न का उत्तर दिये बिना अपना वक्तव्य जारी रखते हैं) मैं आपसे यह कह रहा था कि 20 सूत्री तथा योजना कार्यों में हम अनेक कठिनाइयों के बावजूद उपलब्धियां प्राप्त करने में सफल रहे हैं. आप लोगों ने दूसरी बात यानी चुनाव की उठायी है. मैं चाहूंगा कि इस विधानसभा सेशन के दौरान चुनाव कराये जायें... मैं चाहूंगा कि जब आप अकाल राहत के मामले में अकाल मंत्री को सुनें और बोलने वाले विधायक अपने नाम की पर्ची दें...

कई विधायक : पहले विधायकों को सुना जाये साहब.

—20 सूत्री में छठे सूत्र पर आप थोड़ा प्रकाश डालें.

शि. माथुर : आप बोलिए तो, चाहते क्या हैं?

विधायक : नहीं, मुझे तो याद नहीं है, आप ही डाल दें प्रकाश.

—कोई और बता दे.

—नहीं साहब आप ही बताइए...(शोर और शोर)

—मैं बोलूंगा साहब. पंडाल में आते ही सबसे पहले मैंने पर्ची दी थी.

—पहले सिवाय मैंने दी.

राजस्थान इंका विधायक दल का यह संवाद टेप रिकार्डर पर सुनने के बाद लिखा गया है.

—आज यह जो स्थिति है, यह किसी समय जनता पार्टी की भी थी. उनका हाल हमने देखा है. यह स्थिति ठीक नहीं है.

—हां, बोलिए.

भैरोंसिंह गुर्जर: जब तक पार्टी की मीटिंग नहीं होगी हम कुछ नहीं कह पाते. यदि आज हमारा मुंह बंद कर दिया जाये तो भीतर ही भीतर हम घुटते रहेंगे. पार्टी के अंदरूनी प्रजातंत्र में भी हमें पूरा मौका नहीं दिया जाता. पिछले छः माह से हम मीटिंग की मांग कर रहे हैं. हमने बाहर कभी कोई बात नहीं कही, क्योंकि हम देश की महान नेता इंदिरा जी तथा युवा नेता राजीव जी की इज्जत करते हैं... यदि मुख्यमंत्री चाहते तो 3 दिन में मीटिंग बुला विधायकों का दुख-सुख सुन लिया जाता. पर जबर्दस्ती विधायकों को कारों में पकड़-पकड़, उनके अटके हुए कामों को करवाकर, काम का झांसा देकर उनसे अपने पक्ष में जबर्दस्ती हस्ताक्षर करवाये हैं, जबकि हमने तो सिर्फ मीटिंग बुलाने के लिए कहा था. दक्षिण और दिल्ली के चुनावों का बहाना किया गया. लेकिन आंध्र-कर्नाटक में चुनाव की स्थिति आपसे कितनी सुधरी, यह हमें पता है. **जब दिल्ली के चुनावों में आपने राजस्थान हाउस में मारवाड़ियों की सभा की थी उस वक्त इतने बड़े पंडाल में केवल 16 व्यक्ति थे, जिनमें 8 तो आपके पी.ए. आदि थे. चुनाव में आपकी कितनी प्रभावी भूमिका रही उसका पता इस बात से चल जाता है...**

आपने दिल्ली में एक वक्तव्य दिया था कि कुछ ऐसे गलत लोग चुन कर आ गये हैं जो ऊटपटांग बकते रहते हैं. आप बताइए, इन गलत लोगों को टिकट किसने दिया था? इंदिरा जी और संजय जी ने. उनको चुनकर भेजा जनता ने और आप इन तीनों को गलत बताते हैं?

—शेम शेम शेम (शोर)

शर्म आनी चाहिए

भैरोंसिंह गुर्जर:... शर्म आनी चाहिए आपको. जब आप एम.एल.ए. के खिलाफ ऐसे बयान दें तो अधिकारियों का हौसला तो बढ़ेगा ही. इसीलिए आपके अधिकारियों ने एम.एल.ए. की इज्जत दो कौड़ी की हुई है. आज सचिवालय में जाते हुए मेरे हर साथी का दिल घबराता है, क्योंकि उसे डर होता है कि अधिकारी उसे अंदर आने से रोक न दें. **आपने कभी हमारा दिल टटोला होता शिवचरण जी, आपने हमारे जज्बात समझे होते. हमारा तो आपने बार-बार अपमान किया है...**

आप अखबारों में एम.एल.ए. **को बदनाम करवाने की बातें छपवाते हैं, पर यह नहीं छपवाते कि मारखोड़ा में किसका प्लाट है? शिवचरण माथुर के परिवार के आदमी के प्लाट के बारे में कभी छपवाया आपने? दिल्ली में किसका प्लाट है? कोमड़ा फार्म में किसका प्लाट है? भीलवाड़ा की सिवायचक जमीन पर किसका कब्जा है—बताये आप मुझे,** जहां आपकी धर्मपत्नी सरकारी गाड़ियों में दो-दो, तीन-तीन बार चक्कर लगाती रहती हैं.

एक अन्य विधायक : 'पर्सनल' आरोप आप यहां नहीं लगाइए.

—मेरी बात तो...

—नहीं यह... (शोर)

—यह मेरी पीड़ा है. आप मेरा मुंह बंद कर दें. रोडवेज की बसों में 'ब्लू फिल्म' दिखाने का मामला आया. आपने कुछ नहीं करवाया. क्यों नहीं पूछताछ करवायी? क्या ये फिल्में अमेरिका से आयी थीं? ये आपके अपने बेटे की एम.आई. रोड वाली दुकान से गयी थीं और उस फिल्म को रोडवेज बस में दिखलाया गया था.

—शेम शेम

—नहीं नहीं, आपके इस बेटे की दुकान पर कस्टम अधिकारियों ने छापा तक मारा. क्या यह पार्टी के लिए शर्म की बात नहीं है?

—शेम शेम

—आप एम.एल.ए. को नाहित करते हैं. हमारे साथ महादेव सिंह और विष्णु [illegible] को पुलिस ने गिरफ्तार किया. 7 दिन तक महादेव सिंह को जेल में रखा गया. डाकुओं के साथ होने वाला व्यवहार उनके साथ पुलिस ने किया और शिकायत मिलने पर आपने क्या किया?... मनन कीजिए कि आप हमारे नेता होने के लायक हैं? आप एक बार पर अपने दिल को टटोलकर अपने आप से पूछिए, टटोल कर पूछिए कि क्या आप इस कांग्रेस विधायक मंडल के नेता होने के लायक हैं, या नहीं?... आप इस भैरोंसिंह की बात नहीं सुनते, उस भैरोंसिंह शेखावत की बात सुनते हैं. आपने उनकी चिकित्सा के लिए उन्हें अमेरिका भेजा और उन पर 4 लाख रुपये खर्च करवा दिये... आपको और एम.एल.ए. से [illegible] है. आपका व्यवहार विचित्र है. राज्यसभा चुनावों के समय [illegible] आपसे मिलने क्यों आये थे? क्या मेनका के बारे में आपकी बात हुई थी? गंगानगर में मेनका को सिक्खों से किसने मुलवाया?

विधायक: आप ऐसा नहीं बोल सकते.

—पार्टी मीटिंग में सब बोल सकते हैं.

—यह बकवास कर रहे हैं (शोर).

धैर्य की परीक्षा न लो : हरिदेव जोशी, राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमंत्री

—आपकी जो नाव चल रही है उस नाव में आपको, हमें बिठा रखा है और इसके चप्पू बी. जी. पी. को दे रखे हैं. और उन्होंने इसमें छेद कर दिया है. आप या तो इस नाव से उतर जाएं, त्यागपत्र दे दीजिए, इस पद से हट जाइए नहीं तो हो सकता है कि नाव में आपके साथ साथ हम भी डूब जायें... यदि आपने नेता पद नहीं छोड़ा तो यह राजस्थान ही डूब जायेगा.

सी. पी. जोशी: 20 सूत्री कार्यक्रम एवं अकाल राहत के संबंध में आपने काफी आंकड़े बताये हैं. लेकिन इन आंकड़ों को आधार मान कर राजनैतिक उपलब्धियों को देखा जाये तो स्थिति दूसरी मिलेगी. आप जब तक घोषणाओं पर अमल नहीं करवायेंगे तब तक आंकड़ों का राजनैतिक लाभ नहीं मिलेगा. केवल अधिकारियों के भरोसे आप कार्यक्रम चलाना चाहें तो यह पार्टी के हित में नहीं होगा... आपके एक साथी ने दावा किया कि मुख्यमंत्री के साथ इतने सदस्य हैं. किसी ने कब कहा था कि बहुमत साथ है या नहीं? यह तय करना है तो इसका सबसे बढ़िया तरीका यह है कि आप विश्वास मत प्राप्त कर लीजिए, झगड़ा ही खत्म हो जायेगा. (तालियां)...

पिछली विधानसभा में [illegible] घोटाले के संबंध में मैंने शिकायत की थी... उसने इसकी जांच करवायी? जांच तो हुई उल्टा हुआ. [illegible] में राजस्थान सरकार के एडवोकेट ने [illegible] की पैरवी की और फैसला यह हुआ कि अगले साल भी वही फर्म काम करेगी. एक सामान्य आदमी भी जानता है कि हैंडपंप खुदाई की लागत 110 या 150 रु. प्रतिमीटर से ज्यादा नहीं बैठती और राज्य सरकार उसका भुगतान 240 रु. प्रतिमीटर के हिसाब से कर रही है... पार्टी बदनाम हो रही है, छवि बिगड़ रही है...

हरिदेव जोशी: जो लोग इतिहास की नसीहत को भूलते हैं वे जीवित नहीं रहते हैं. इतिहास से नसीहत यह लेनी है... पहाड़िया जी के समय में यह शिकायत थी कि फाइलें नहीं निकलतीं. आज आपके खिलाफ भी यही शिकायत है. पहाड़िया जी के समय यह शिकायत थी कि वे समय के पाबंद नहीं रहते. आपके बारे में भी यही शिकायत है. कुल मिलाकर स्थिति कोई अच्छी नहीं. कार्यक्रम बनाये जाते हैं लेकिन उनमें विधायकों, पार्टी कार्यकर्ताओं को साथ नहीं लिया जाता. जनता तथा प्रशासन के बीच कार्यकर्ताओं की जो कड़ी होती है वह आज उपेक्षित महसूस कर रही है. कार्यकर्ता के नकार आने वाले हैं. यदि यही स्थिति रही तो राजस्थान में दक्षिण की पुनरावृत्ति हो सकती है.

चतुर्भुज चौधरी: आप प्रशासन पर काबू नहीं कर पा रहे हैं. विधायकों के प्रति आपके व्यवहार से असंतुष्ट रहते हैं... भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में आप पूरी तरह असफल रहे. इसलिए मैं मांग करता हूं कि पार्टी के नेता पद की कुर्सी तुरंत छोड़ दें.

देवी रैगर: आप काम अच्छा कर रहे हो... प्रशासन ने मंत्री को और बोर्ड आप क्यों अच्छा बोलो साहब, पर पार्टी को संगठन खत्म हो गया है. 900 लोगों ने पार्टी से नाम निकाल दिये.

हरसहाय मीणा: आपने डेढ़ वर्ष में क्या किया? आप किसी की सुनते नहीं. भ्रष्टाचार ने पार्टी की छवि को बिगाड़ दिया है.

—साहब अब हमें बोलने दीजिए.

—हम भी तो बोलेंगे. माथुर साहब, अगर कल आपको दिल्ली जाना था तो मीटिंग पहले रख सकते थे. हम अपनी बात रखना चाहते हैं. (शोर)

—हमने मीटिंग की मांग की थी. जो यहां न सुनना चाहें वे चले जायें. हम तो बोलेंगे. आप मीटिंग बंद नहीं कर सकते.

—जवाब बाद में दें, पहले हमारी बात सुनें.

—नहीं, नहीं ऐसे नहीं चलेगा. क्या बात कर रहे हैं. क्या जबर्दस्ती कर रहे हैं. आप दबाव डालना चाहते हैं. ताकत है तो शक्ति परीक्षण करो.

—मीटिंग परसों जारी रहेगी.

—तो जवाब भी परसों दें. (शोर).

—फिर तीन महीने बाद मीटिंग बुलाई है. और अब जल्दी जल्दी काम करके मुंह चुरा कर भागना चाहते हैं. (शोर).

शि. माथुर: एक दो एम.एल.ए. ने व्यक्तिगत आरोप लगाये हैं. उस बारे में मैं कुछ कहना चाहूंगा. एम.एल.ए. पर लांछन लगाने वाले आरोप के बारे में मैं कहना चाहूंगा कि मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा...

—(शोर) तो आपने खंडन क्यों नहीं किया?... खंडन कैसे नहीं होता?

शि. माथुर: मेरे पास कोई भी एक इंच जमीन बता दे तो विश्वास प्राप्त करने की बात तो बाद में, मैं अभी इसी वक्त इस्तीफा दे दूंगा.

एक विधायक: परिवार वालों, रिश्तेदारों के पास तो है? (तालियां और हंसी)

शि. माथुर: दूसरी बात मेरे बच्चे के बारे में कही गयी है. मेरा बच्चा एक फर्म का पार्टनर है उस स्थान पर विदेशी सामान रखा मिला, यह सही बात है. मेरा बच्चा प्रथम श्रेणी में पास इंजीनियर है. मैं चाहता तो कहीं भी उसे मंत्री होने वक्त ही अच्छी जगह लगवा सकता था पर मैंने खुद का धंधा करने की सलाह उसे दी. अपनी मेहनत से वह आगे बढ़ा. किसी ने शिकायत की, छापा मारा गया. कुछ रिपेयरिंग का सामान पड़ा हुआ था, वह मिला. वह करीब 18 हजार रु. का ही था. इसे अतिशयोक्ति के साथ प्रचारित किया जा रहा है... (हंगामे और शोर के साथ बैठक समाप्त हो जाती है.)

लेकिन शायद ऐसी बैठकें होती रहेंगी. ■